नवयुग

आधुनिकता ने यह कैसी हवा है लाई।
भाई ही भाई से आज कर बैठता है लड़ाई।।

बहती थी यहीं पर पावन गंगा की अमृतधारा।
यह देश नहीं मानों परिवार था हमारा।।

लोगों के हृदय में बसती थी सच्चाई और ईमान
आज मनुष्य क्यों बन बैठा शैतान।।

होता था भाई -भाई में अटूट प्यार|
आज क्यों कर रहा भाई ही भाई पर वार।।

धरती थी यह स्वर्ग की नगरी |
बन बैठी है आज वह क्यों नगरी नर्क की।।

काम क्रोध मोह ने डाला मानव पर माया का जाल|
देखो बन बैठा वह एक दूसरे का काल।।

दया धर्म कुछ नहीं यहाँ पर पैसे का सब जाल |
देखो नवयुग का यह कैसा दौर है आया।।

मां धरती करती आज सपूतों से गुहार|
छोड़ो खुद में लड़ना अब हो जाओ एकाकार ।।

शत्रु बैठा घात लगाकर चलता चाल पर चाल|
बनो स्वयं इतना सशक्त तोड़ो हर एक मायाजाल।।

आज ममतामई धरती कर रही बार-बार गुहार|
लौट आओ मेरे लाल करो ना मानवीय व्यवहार।।

मां की ममता रही पुकार छोड़ो काम क्रोध मोह तुम|
तभी होगा अखंड भारत का सपना साकार।।

मीनाक्षी शुक्ला

बी. ए. प्रथम वर्ष (हिंदी)